

८२०

॥५॥॥॥॥ ॥५॥॥॥॥

॥५॥॥॥॥

हं स४॥ यमनाविदावकतकहल हंसावज कामिनी कमालनी द्वित
कलकल नितानाद४ प्रमदं तलाउ तवनन्द तवज४॥ सिंहनाद४ का॥ ॥ सकमाङ्गनाठ
उवति प्रवाधित॥ अयिता मृषाठ हनर्मननिद्रयावतिक नि कङ्कनिल यदिल मित्ती
नृवविबिना द न वृतादिनामित मीततान प्रवाधित॥ उवति मृगल्लुम्वर्ध
नजाजबोम४॥ गुरुद्वजदीयितवर्द्धि मदी काला विममल लनदामराजिजी
वृ४॥ सुवितामृगल्लुम्वर्ध म गाउ ये ल कवधन विप्रति जीवतमयागं॥ वृत्ता

श्री २७

२८